शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक

प्रो. बी. एल. जैन

ISBN : 978-81-920597-1-6

कृति : शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक : प्रो. बी. एल. जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूं 341306 (राजस्थान)

सम्पादक मण्डल : डॉ. मनीष भटनागर
डॉ. विष्णु कुमार
डॉ. सरोज राय
डॉ. आभा सिंह
डॉ भावग्राहीप्रधान
डॉ. अमिता जैन
डॉ. गिरिराज भोजक
डॉ गिरधारी लाल शर्मा

संस्करण : मई, 2018 (प्रथम)

मूल्य : 200/-

प्रकाशन : महावीर पथ पब्लिकेशन
(प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान)
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
Ph. 7220089301, 7220089302,
www.pvjss.com, email: pvjss108@gmail.com

कम्प्यूटराईज्ड : वैशाली ग्राफिक्स, लाडनूं

मुद्रक : जैन कम्प्यूटर, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान)

अनुक्रमणिका

1. शैक्षिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- प्रो. बी. एल. जैन 01-05

2. अध्यापक शिक्षा की समस्याएं

- डॉ. मनीष भटनागर 06-11

3. Action Research : A Remedial Device in Teaching English in India

- Dr. Bhabagrahi Pradhan 12-16

4. अध्यापकों की सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक स्तर सम्बन्धी समस्या एवं समाधान

- डॉ. विष्णु कुमार 17-23

5. राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी तथा उसकी ई-सुविधाएं

- डॉ. अमिता जैन 24-27

6. वर्तमान शिक्षा के मूल्यों के बदलते प्रतिमान एक चुनौती समाधान

- डॉ. सरोज राय 28-31

7. अध्यापक शिक्षा : पाठ्यचर्या विकास के नूतन आयाम

- डॉ. गिरिराज भोजक 32-36

8. शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

- डॉ. आभा सिंह 37-40

9. अध्यापक शिक्षा में अध्यापन अभ्यास कार्यः समीक्षात्मक अध्ययन

- डॉ गिरधारी लाल शर्मा 41-43

10. सागर ब्लॉक के गंभीरिया गांव के बीड़ी बनाने वाले पालकों का अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन

- डॉ. अदिति गौतम 44-49

11. शिक्षा का अधिकार

- सोनम गंगवाल 50-53

अध्यापक शिक्षा में अध्यापन अभ्यास कार्यः समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ गिरधारी लाल शर्मा

"अध्यापक के सामने बड़े से बड़े व्यक्ति ने सिर झुकाया है; सांसारिक ऐश्वर्य एवं विभुता उसके महत्व के आगे तुच्छ है।" एक विचारक की ये पंक्तियां अध्यापक के सार्वभौम महत्व को उजागर करने वाली है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सबसे अधिक सहभागिता शिक्षकों की ही होती है। आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में "शिक्षक का मार्ग त्याग, बलिदान एवं साधना का मार्ग है। उसका जीवन जितना संयमित, सात्विक, नैतिक, निष्काम और अध्ययनशील होगा, वह उतना अधिक प्रभावी काम कर सकेगा।"

भारत में प्राचीनकाल से शिक्षक–शिक्षा की अत्यन्त समृद्ध परम्परा रही है। जिसमें देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होते रहे हैं। वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी के युग में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम में अत्यधिक बदलाव हुए हैं। विभिन्न नवाचारों के प्रयुक्त होने से शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। भावी शिक्षकों में श्रेष्ठ अध्यापन कौशलों का विकास सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक–शिक्षा में **अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम** की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापन अभ्यास को शिक्षक–शिक्षा का प्राण तत्व भी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों में शिक्षकोचित गुणों का विकास करना है। इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थी एक नियत अवधि तक विभिन्न विद्यालयों में जाकर शिक्षण कार्य का अभ्यास करते हैं। प्रशिक्षक उनका निरन्तर मूल्यांकन करते हैं तथा उनकी कमियों से उन्हें अवगत कराकर निरन्तर मार्गदर्शन करते हैं। एक शिक्षक अपने शिक्षण को किस प्रकार अधिकाधिक प्रभावशाली बना सकता है, वे समस्त कौशल अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम के दौरान सिखाए जाते हैं। प्रशिक्षणार्थियों को नवीन शिक्षण विधियों, नवीन तकनीकी संसाधनों, शिक्षण सहायक सामग्री (श्रव्य–दृष्य सामग्री) का प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया जाता है, ताकि विद्यार्थियों तक विषय–वस्तु को सरल रूप में प्रस्तुत किया जा सके तथा विद्यार्थी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में रूचिपूर्वक सक्रिय सहभागिता निभा सकें।